पाठ 7

भक्ति पदावली

(1)

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोर–मुकुट मकराकृत कुंडल, अरुन तिलक सोहे भाल।
मोहनि मूरति, साँवरि सूरति, नैना बने बिसाल।
अधर–सुधा–रस मुरली राजति, उर बैजंती माल।
छुद्र घंटिका कटि–तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।
'मीरा' प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।।

(2)

हरि, तुम हरो जन की पीर।
द्रौपदी की लाज राखी, तुरत बढ़ायो चीर।
भक्त कारण रूप नरहरि, धार्‌यो आप सरीर।
हिरणाकुश कुँ मारि लीन्हों, धार्‌यो नाहीं धीर।
बूढ़तो गजराज राख्यौ, करियो बाहर नीर।
दासी मीरा लाल गिरिधर, चरण–कँवल पै सीर।।

(3)

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा करि अपनायो।
जन्म–जन्म की पूँजी पाई, जग में सभी गँवायो।
खरचैं नहिं, कोई चोर न लेवै, दिन–दिन बढ़त सवायो।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरख–हरख जस गायो।।

मीराँबाई

शब्दार्थ

मकराकृत	–	मगर या मछली जैसी आकृति वाला	अरुन	–	अरुण, लाल
बिसाल	–	विशाल / बड़ा	राजति	–	शोभित है
छुद्र	–	क्षुद्र, छोटा	रसाल	–	मधुर

नूपुर–सबद	–	घुंघरुओं की झनकार	धीर	–	धैर्य
चरण–कँवल	–	चरण रूपी कमल	अमोलक	–	अमूल्य
नरहरि	–	नृसिंह, विष्णु के एक अवतार	गँवायो	–	खो दिया
भव–सागर	–	संसार रूपी समुद्र	हरख–हरख	–	हर्षित होकर
भगत–बछल	–	भक्त–वत्सल, भक्तों को प्यार करने वाला			
बैजंती माल	–	वैजयंती माला, पाँच रंगों के मोतियों की माला जिसे विष्णु या कृष्ण धारण करते हैं			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. मीराँ अपनी आँखों में किसे बसाना चाहती थी?
2. द्रौपदी की लाज किसने बचाई?
3. मीराँ को सतगुरु से कौनसी वस्तु मिली?

लिखें

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मीराँ ने पीर को हरने वाला किसे बताया?
2. प्रह्लाद को बचाने के लिए हरि ने कौन–सा रूप धारण किया?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. श्री कृष्ण के किस रूप को मीराँ अपनी आँखों में बसाना चाहती है?
2. मीराँ ने राम नाम रूपी धन को अमूल्य क्यों बताया?
3. मीराँ ने संसार को पार करने का क्या उपाय बताया?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मीराँ ने 'हरि तुम हरो जन की पीर' पद में कृष्ण की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?
2. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए–
   (क) सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भव सागर तर आयो।
   (ख) अधर–सुधा–रस मुरली राजति, उर बैजंती माल।
3. मीराँ ने संसार को पार करने का क्या उपाय बताया?

भाषा की बात

1. 'मोहनि मूरति', 'साँवरि–सूरति' में प्रथम वर्ण की आवृत्ति हुई है, 'म–म' तथा 'स–स।' इस प्रकार काव्य में वर्णों की आवृत्ति जहाँ होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। अलंकार का शाब्दिक अर्थ

है–सुंदरता को बढ़ाने वाला कारक। काव्य (कविता) में जो कारक उसके सौंदर्य में वृद्धि करते हैं, अलंकार कहलाते हैं। पाठ में आए अन्य अलंकारों के बारे में अध्यापक जी की सहायता से जानकारी प्राप्त कीजिए।

2. पाठ में से निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप को छाँटकर लिखिए –
मूर्ति, विशाल, क्षुद्र, शब्द, वत्सल, कृपा, रत्न, हर्ष

3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित संज्ञा शब्दों के उचित भेद अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए–
(क) बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
(ख) हरि! तुम हरो जन की पीर।
(ग) हरक–हरक जस गायो।
(घ) द्रौपदी की लाज राखी।

पाठ से आगे

1. मीराँ के इन पदों को बालसभा में गाकर सुनाइए।
2. मीराँ के जीवन में आए कष्टों को जानिए और समस्याओं से लड़ने और समाधान खोजने पर चर्चा कीजिए।

यह भी करें

1. हमारे समाज में मीराँ–सी भक्तिन व विदुषी और भी कई महिलाएँ हुई हैं, उनकी जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. अंतर्कथाएँ जानिए –
(क) द्रौपदी का चीर बढ़ाना (ख) भक्त प्रह्लाद की रक्षा (ग) गजराज की ग्राह से रक्षा।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

भक्ति, व्यक्ति, शक्ति, सिद्धि,

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''किसी के पाँव का काँटा निकाल कर देखो, तुम्हारे दिल की जलन भी जरूर कम होगी''

केवल पढ़ने के लिए

सोनै री चिड़कली रै

सोनै री चिड़कली रै, प्यारो म्हारो देसड़ो,
नर वीराँ री खान जगत अगवाणी रै।।
दूध दही री अठै नदियाँ बहती, रिध सिध साथै नव निध रहती,
होती अठै मोकळी गायां, रहती फळफूलां री छायां,
करसा अन्न घणो निपजाता, बांनैं देख देव हरषाता,
सस्य श्यामला रै भारत भोम है,
ई' रो अन्नपूर्णा रूप, दुनियां जाणी रै।। सोनै री।।1।।

आ' धरती नर नाहर जाया, नार्यां भी रण में हाथ दिखाया,
सूरा लड़ता सीस कट्योड़ा, देख्या पीछै नहीं हट्योड़ा,
रण में सदा विजय ही पाई सारै धरम धजा फहराई,
आ' तो करम भौम है रै, श्री भगवान री,
लियो बार–बार अवतार, अमर कहाणी रै।। सोनै री।।2।।

आ' धरती है रिषि मुनियां री, चिन्ता करती सब दुनियां री,
गूंजी अठै वेद री वाणी, गीता रण में पड़ी सुणाणी,
विकस्यो हो विज्ञान अठै ही, जलमी सारी कळा अठै ही?
आ' तो जगत गुरु ही रै, भारत–भारती,
अब तन मन जीवण वार, बा' छवि ल्याणी रै।। सोनै री।।3।।